

NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 19-12-2025

विषय सूची

- » गोवा मुक्ति दिवस
- » लोकसभा में प्रतिभूति बाजार संहिता विधेयक 2025 का परिचय
- » क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता बूम है या एक बबल?
- » प्रवर समिति की रिपोर्ट : दिवाला और दिवालियापन संहिता (IBC) संशोधन विधेयक 2025

संक्षिप्त समाचार

- » मसौदा सामग्री प्रसारण नीति, 2025
- » 2050 तक 900 मिलियन लोग मधुमेह से ग्रसित होने की संभावना
- » क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (RRBs) के लिए नया लोगो
- » आंध्र का रेयर अर्थ कॉरिडोर
- » रतले परियोजना
- » रिस्पॉन्ड बास्केट 2025

गोवा मुक्ति दिवस

संदर्भ

- 19 दिसंबर वह दिन है जब गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराया गया था और औपचारिक रूप से 1961 में भारत में एकीकृत किया गया था।

आक्रमण का क्रम

- **प्रथम नियन्त्रण(1510):** अल्बुकर्क ने स्थानीय सरदार तिमोजी की सहायता से गोवा पर नियन्त्रण किया।
- **गोवा का हास:** मानसून के दौरान आदिल शाह की सेनाओं ने गोवा पर फिर से नियन्त्रण कर लिया।
- **अंतिम विजय (नवंबर 1510):** अल्बुकर्क सुदृढ़ीकरण के साथ लौटा और बीजापुर सेनाओं को निर्णायक रूप से हराया।
- **पुर्तगालियों की सफलता के कारण:**
 - ▲ बेहतर नौसैनिक शक्ति और तोपखाना
 - ▲ बीजापुर सल्तनत का कमजोर आंतरिक नियंत्रण
 - ▲ असंतुष्ट समूहों से स्थानीय समर्थन
 - ▲ अल्बुकर्क का प्रभावी नेतृत्व
- **प्रभाव:**
 - ▲ गोवा पुर्तगाली भारत की राजधानी बन गया (एस्तादो दा इंडिया)।
 - ▲ इसने भारत में यूरोपीय क्षेत्रीय उपनिवेशवाद की शुरुआत को चिह्नित किया।
 - ▲ गोवा व्यापार, प्रशासन और ईसाई धर्म का केंद्र बनकर उभरा।
- **गोवा यूरोपीय शक्ति द्वारा नियंत्रण किया जाने वाला प्रथम भारतीय क्षेत्र था और स्वतंत्रता पाने वाला अंतिम।**

पृष्ठभूमि :

- देश की 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात, शासन के सामने कई बड़ी चुनौतियाँ थीं: गोवा, जम्मू और कश्मीर, हैदराबाद जैसे क्षेत्रों का एकीकरण।
- भारत सरकार ने पुर्तगाल को शांतिपूर्वक गोवा सौंपने के लिए मनाने के लिए कई राजनयिक संपर्क किए।

- ▲ पुर्तगाल, जिसने गोवा पर 451 वर्षों तक शासन किया, ने ऐसे सभी अनुरोधों को अस्वीकार कर दिया।
- ▲ इससे गोवा मुक्ति आंदोलन शुरू हुआ, जिसमें स्थानीय नेताओं और जनता ने महत्वपूर्ण भागीदारी की।

ऑपरेशन विजय

- ऑपरेशन विजय भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा जवाहरलाल नेहरू के प्रधान मंत्री रहते हुए गोवा पर नियन्त्रण करने और इसे शेष भारत के साथ मिलाने के लिए शुरू किया गया था।
- यह ऑपरेशन 36 घंटे से अधिक समय तक चला और इसमें वायु, समुद्र और भूमि पर भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा समन्वित हमले शामिल थे।
- **परिणाम:** पुर्तगाली सेना ने 19 दिसंबर 1961 को आत्मसमर्पण कर दिया, जिससे दमन और दीव के साथ गोवा को मुक्ति मिली।
- **30 मई 1987 को,** केंद्र शासित प्रदेश को विभाजित कर दिया गया, और गोवा भारत का पच्चीसवाँ राज्य बन गया, जबकि दमन एवं दीव केंद्र शासित प्रदेश बने रहे।

गोवा मुक्ति आंदोलन के प्रमुख नेता

- **ट्रिस्टाओ डी ब्रागांजा कुन्हा:** टीबी कुन्हा को गोवा में पुर्तगाली शासन को समाप्त करने के लिए प्रथम आंदोलन शुरू करने के लिए “गोवा राष्ट्रवाद के जनक” के रूप में जाना जाता है।
 - ▲ उन्होंने गोवा कांग्रेस समिति की स्थापना की और इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से संबद्ध कराने में सफलता प्राप्त की।
- **जुलियाओ मेनेजेस:** मेनेजेस ने इस क्षेत्र में राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गोमंतक प्रजा मंडल नामक प्रकाशन की स्थापना की।
- **लिबिया लोबो सरदेसाई:** 1955 से 1961 तक, उन्होंने वॉयस ऑफ फ्रीडम नामक एक भूमिगत रेडियो स्टेशन का संचालन किया, जिसने पुर्तगाली शासित गोवा में संदेश प्रसारित किए।

- ▲ गोवा की मुक्ति के पश्चात, लोबो गोवा, दमन और दीव की प्रथम पर्यटन निदेशक बनीं; उन्हें **2025 में पद्म श्री से सम्मानित** किया गया।
- **पुरुषोत्तम काकोडकर:** उन्होंने मडगांव में एक आश्रम स्थापित किया, जो स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक गोपनीय केंद्र बन गया, जिसने कई स्वतंत्रता सेनानियों को आश्रय और समर्थन प्रदान किया।

Source: BS

लोकसभा में प्रतिभूति बाजार संहिता विधेयक 2025 का परिचय

संदर्भ

- केंद्रीय वित्त मंत्री ने लोकसभा में प्रतिभूति बाजार संहिता विधेयक, 2025 प्रस्तुत किया।

परिचय

- यह विधेयक निम्नलिखित अधिनियमों को एकीकृत करने का प्रस्ताव करता है:
 - ▲ प्रतिभूति अनुबंध (विनियमन) अधिनियम, 1956
 - ▲ भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI) अधिनियम, 1992
 - ▲ डिपॉजिटरी अधिनियम, 1996

मुख्य प्रावधान

- **SEBI की संरचना में सुधार:** SEBI बोर्ड की शक्ति 9 से बढ़ाकर 15 सदस्यों (अध्यक्ष सहित) तक करने का प्रस्ताव है। पुनर्गठित बोर्ड में शामिल होंगे:
 - ▲ अध्यक्ष
 - ▲ केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त दो अधिकारी
 - ▲ भारतीय रिज़र्व बैंक का एक पदेन सदस्य
 - ▲ अन्य ग्यारह सदस्य, जिनमें कम से कम पाँच पूर्णकालिक सदस्य होंगे (वर्तमान में तीन पूर्णकालिक सदस्य हैं)।
 - ▲ SEBI बोर्ड के सदस्यों को निर्णय-निर्माण में भाग लेने से पूर्व अपने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हितों का प्रकटीकरण करना अनिवार्य होगा।

- **अपराधमुक्तिकरण और प्रवर्तन ढाँचा:** विधेयक में “लघु, प्रक्रियात्मक और तकनीकी प्रकृति” के उल्लंघनों को अपराध की श्रेणी से हटाकर नागरिक दंड में बदलने का प्रस्ताव है, ताकि व्यापार करने में आसानी हो एवं अनुपालन भार कम हो।
 - ▲ विधेयक “अवैध लाभ या हानि” को नागरिक दंड के अंतर्गत लाएगा और दंड केवल गंभीर मामलों जैसे इनसाइडर ट्रेडिंग या गैर-सार्वजनिक जानकारी के आधार पर व्यापार करने तक सीमित होंगे।
- **निरीक्षण पर सीमा:** यदि किसी नियम या संहिता के प्रावधान का उल्लंघन हुआ है, तो उल्लंघन की तिथि से आठ वर्ष बीत जाने पर निरीक्षण नहीं किया जा सकेगा।

विधेयक का महत्व

- यह अनुपालन भार को कम करने, नियामक शासन में सुधार करने और प्रौद्योगिकी-प्रेरित प्रतिभूति बाजारों की गतिशीलता को बढ़ाने हेतु सिद्धांत-आधारित विधायी ढाँचा बनाने का प्रयास करता है।
- विधेयक निवेशक संरक्षण को सुदृढ़ करने और देश के वित्तीय बाजारों में व्यापार करने की सुगमता को बढ़ाने का लक्ष्य रखता है।
- कानूनों के एकीकरण और दंडों के तार्किकीकरण के माध्यम से यह भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धी वित्तीय बाजार बनाने के उद्देश्य का समर्थन करता है।

विधेयक की चिंताएँ

- **SEBI में शक्तियों का केंद्रीकरण:** विधेयक SEBI को विधायी (नियम-निर्माण), कार्यकारी (प्रवर्तन), जाँच और न्यायिक शक्तियाँ प्रदान करता है।
 - ▲ ऐसा केंद्रीकरण शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत का उल्लंघन माना जाता है, जो अधिकार के दुरुपयोग को रोकने एवं संस्थागत संतुलन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।
- **विधायी कार्यों का प्रत्यायोजन:** कई प्रमुख नीतिगत विषय, जैसे विनियमन का दायरा, पंजीकरण आवश्यकताएँ, दंड, छूटें, और यहाँ तक कि “प्रतिभूतियों” की परिभाषा भी अधीनस्थ विधान (नियमों और विनियमों) पर छोड़ दी गई है।

- **लोकतांत्रिक जवाबदेही:** कार्यपालिका और नियामक को व्यापक विवेकाधिकार देकर संसद की भूमिका केवल सक्षम बनाने वाली संस्था तक सीमित हो जाती है, न कि वास्तविक कानून बनाने वाली प्राधिकरण तक।
- **बलपूर्वक प्रवर्तन शक्तियाँ:** तलाशी, जब्ती, संपत्ति की कुर्की, बैंक खातों को फ्रीज करना, और एकतरफा अंतरिम आदेश जैसी व्यापक शक्तियाँ, पर्याप्त सुरक्षा उपायों के बिना प्रदान की गई हैं।

आगे की राह

- SEBI के अंदर जाँच, प्रवर्तन और न्यायिक कार्यों का पृथक्करण सुनिश्चित किया जाए ताकि संस्थागत पक्षपात रोका जा सके।
- नियमित रिपोर्टिंग के माध्यम से संसदीय निगरानी और जवाबदेही को सुदृढ़ किया जाए।
- अनुपातिक, जोखिम-आधारित नियामक दृष्टिकोण अपनाया जाए, जिसमें आपराधिक दंड केवल गंभीर बाजार दुरुपयोग तक सीमित हों।

Source: AIR

क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता बूम है या एक बबल?

संदर्भ

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) पर वैश्विक व्यय इस वर्ष \$375 बिलियन और 2026 तक \$500 बिलियन तक पहुंचने की संभावना है।
 - ▲ यह सवाल उठाता है कि क्या AI का मूल्य वास्तविक तकनीकी प्रगति से प्रेरित है, या निवेशकों के उत्साह से।

AI बबल क्या है?

- AI बबल उन चिंताओं को संदर्भित करता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी कंपनियाँ और संबंधित निवेश बहुत अधिक मूल्यवान हो गए हैं।
 - ▲ बाजार मूल्यांकन और निवेश का स्तर प्रौद्योगिकी के वास्तविक वित्तीय रिटर्न एवं वास्तविक विश्व में कार्यान्वयन से काफी आगे निकल रहा है।

- यह एक संभावित स्टॉक मार्केट बबल का प्रतिनिधित्व करता है जो कुछ सीमा तक 1990 के दशक के अंत के डॉट-कॉम बूम के बराबर है।

डॉट-कॉम बबल

- डॉट-कॉम बबल 1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरुआत में इंटरनेट-आधारित कंपनी के मूल्यांकनों में तीव्रता से वृद्धि और अचानक गिरावट की अवधि थी।
- **डॉट-कॉम बबल के कारण:**
 - ▲ **इंटरनेट प्रचार :** इंटरनेट को एक क्रांतिकारी तकनीक के रूप में देखा गया जो “सब कुछ बदल देगी।” निवेशकों का मानना था कि लाभ बाद में आएगा, हानि की परवाह किए बिना।
 - ▲ **आसान पैसा और सट्टा :** प्रचुर मात्रा में उद्यम पूंजी और खुदरा निवेशक भागीदारी। न्यूनतम राजस्व वाले स्टार्टअप के आईपीओ (IPOs) को ओवरसब्सक्राइब किया गया था।
 - ▲ **“लाभ पर विकास” की मानसिकता :** कंपनियाँ लाभ पर नहीं, बल्कि वेबसाइट ट्रैफिक और ब्रांड दृश्यता पर ध्यान केंद्रित करती थीं। पारंपरिक मूल्यांकन मेट्रिक्स को नजरअंदाज कर दिया गया था।

प्रभाव:

- कई डॉट-कॉम कंपनियों ने व्यवहार्य राजस्व मॉडलों के बिना ही अपनी पूंजी व्यय कर दी।
- जब ब्याज दरें बढ़ीं और कमाई निराशाजनक रही, तो निवेशकों का विश्वास टूट गया।
- गूगल, अमेज़न और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियाँ वास्तविक व्यवसाय बनाकर और अनुकूलन करके डॉट-कॉम क्रैश से बची रहीं।
- अमेज़न ने क्लाउड कंप्यूटिंग में विविधता लाई; माइक्रोसॉफ्ट ने दीर्घकालिक रणनीतिक बदलावों के माध्यम से अपना मूल्य फिर से बनाया।

बबल-जैसी विशेषताओं के प्रमुख संकेतक

- **मूल्यांकन की चरम सीमाएँ :** “मैग्निफिसेंट सेवन” प्रौद्योगिकी कंपनियाँ (NVIDIA, माइक्रोसॉफ्ट,

अल्फाबेट, अमेज़न, मेटा, टेस्ला, और एप्पल) अब मुख्य रूप से AI के उत्साह से प्रेरित होकर S&P 500 के कुल बाज़ार पूंजीकरण का लगभग 30% प्रतिनिधित्व करती हैं।

- ▲ OpenAI का मूल्यांकन केवल सैकड़ों मिलियन राजस्व उत्पन्न करने के बावजूद तीन गुना से अधिक हो गया।
- ▲ विश्लेषकों का अनुमान है कि इस मूल्यांकन का लगभग 25% AI द्वारा पर्याप्त वित्तीय लाभ देने की उम्मीदों के कारण है।
- **अत्यधिक पूंजी निवेश :** AI उद्यम पूंजी फंडिंग अब 2025 में सभी उद्यम पूंजी निवेश का लगभग 58% प्रतिनिधित्व करती है, जो अन्य क्षेत्रों को बाहर कर रही है।
 - ▲ एक ही तकनीक में यह एकाग्रता चिंताएँ बढ़ाती है—अगर AI निराश करता है, तो बाज़ार पूंजीकरण का एक बड़ा हिस्सा समाप्त हो सकता है।
- **प्रचार और कार्यान्वयन के बीच अंतर:** बाज़ार की अपेक्षाओं और वास्तविक व्यापार परिनियोजन के बीच एक महत्वपूर्ण विसंगति उपस्थित है।
 - ▲ कंपनियाँ प्रायः उन्हें निष्पादित करने के लिए आवश्यक पूंजी के बिना बड़ी परियोजनाओं और उत्पाद योजनाओं की घोषणा करती हैं।

AI बूम को क्या अलग बनाता है?

- डॉट-कॉम युग के विपरीत, आज की “अभूतपूर्व” विशेषता केवल स्टॉक की कीमतें नहीं हैं, बल्कि इसमें बड़े पैमाने पर वास्तविक निवेश शामिल है: डेटा सेंटर, सेमीकंडक्टर विनिर्माण, AI अवसंरचना।
- ये भौतिक, पूंजी-गहन परिसंपत्तियाँ हैं, न कि केवल सट्टा वेबसाइटें।
- यह वास्तविक उत्पादकता और अनुसंधान लाभ के लिए क्षमता को दर्शाता है।

एकाग्रता के जोखिम

- फर्मों का एक छोटा समूह AI निवेश पर प्रभुत्वशाली है।
- यदि वे विफल होते हैं:

- ▲ धनी निवेशक व्यय में कटौती कर सकते हैं;
- ▲ व्यापक आर्थिक विकास प्रभावित हो सकता है;
- ▲ छोटी फर्मों, श्रमिकों और आपूर्तिकर्ताओं को असंगत रूप से अधिक हानि होती है;
- ▲ निष्क्रिय डेटा सेंटर AI युग के “परित्यक्त मॉल” बन सकते हैं।

आगे की राह

- AI में दीर्घकालिक आर्थिक क्षमता के साथ एक परिवर्तनकारी तकनीकी परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन अत्यधिक प्रचार और बढ़ी हुई कीमतें एक सट्टा बबल बनाने का जोखिम उठाती हैं।
- एक बाज़ार सुधार, यदि होता है, तो यह AI को बाधित करने के बजाय अस्थिर खिलाड़ियों को बाहर कर देगा।
- वास्तविक चुनौती नवाचार को सुदृढ़ व्यावसायिक मॉडल, विनियमन और कौशल के साथ सरेखित करने में निहित है।
- अंततः, AI का प्रभाव बाज़ार के उत्साह पर नहीं, बल्कि सतत, समावेशी और उत्पादकता बढ़ाने वाली वृद्धि प्रदान करने की उसकी क्षमता पर निर्भर करेगा।

Source: TH

प्रवर समिति की रिपोर्ट : दिवाला और दिवालियापन संहिता (IBC) संशोधन विधेयक 2025

संदर्भ

- लोकसभा की प्रवर समिति के अध्यक्ष ने दिवाला और दिवालियापन संहिता (संशोधन) विधेयक, 2025 पर रिपोर्ट निम्न सदन में प्रस्तुत की।

प्रवर समिति की सिफ़ारिशें

- समिति ने राष्ट्रीय कंपनी विधि अपीलीय न्यायाधिकरण (NCLAT) को दिवाला अपीलों पर निर्णय लेने के लिए तीन माह की समय-सीमा तय करने का प्रस्ताव दिया है।
- ‘सेवा प्रदाता’ (service provider) की परिभाषा में संशोधन कर ‘पंजीकृत मूल्यांकनकर्ता’ को IBC के अंतर्गत प्रदत्त संस्थाओं की सूची में शामिल करने और ‘पंजीकृत मूल्यांकनकर्ता’ की परिभाषा को विधेयक में सम्मिलित करने का सुझाव दिया गया है।

- समिति ने यह भी सुझाव दिया कि संगति बनाए रखने के लिए जहाँ-जहाँ सेवा प्रदाता शब्द का प्रयोग किया गया है, वहाँ 'पंजीकृत मूल्यांकनकर्ता' का उपयुक्त उल्लेख किया जाए।
- कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया (CIRP) पर समिति ने प्रस्ताव दिया कि समाधान योजना की परिभाषा को विस्तृत किया जाए ताकि CIRP से गुजर रहे कॉर्पोरेट देनदार के लिए एक से अधिक समाधान योजनाएँ प्रस्तुत की जा सकें।

विधेयक के मुख्य प्रावधान

- **CIRP का अनिवार्य प्रवेश:** विधेयक में प्रावधान है कि यदि चूक सिद्ध हो जाती है और आवेदन पूर्ण है, तो राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (NCLT) को 14 दिनों के अंदर दिवाला आवेदन स्वीकार करना होगा। इस समय-सीमा पर न्यायिक विवेकाधिकार समाप्त कर दिया गया है।
- **ऋणदाता-प्रारंभित दिवाला समाधान प्रक्रिया (CIIRP):** विशेष वित्तीय ऋणदाताओं के लिए एक नई, मुख्यतः न्यायालय-बाह्य प्रक्रिया शुरू की गई है।
 - ▲ इस प्रक्रिया में प्रबंधन देनदार के पास रहता है, लेकिन समाधान पेशेवर (RP) की देखरेख में, और इसे 150 दिनों में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।
- **तरलन (Liquidation) में ऋणदाताओं की समिति (CoC) की भूमिका:** CoC को तरलन प्रक्रिया की निगरानी करने और परिसमापक को नियुक्त या प्रतिस्थापित करने का अधिकार दिया गया है, जिससे नियंत्रण केवल NCLT-नियुक्त परिसमापक से हटकर CoC के पास आ जाता है।
- **सरलीकृत वापसी:** दिवाला आवेदन की वापसी केवल CoC के गठन के बाद और समाधान योजनाओं के लिए प्रथम आमंत्रण से पहले ही अनुमति दी जाएगी। इसके लिए 90% CoC की स्वीकृति आवश्यक होगी ताकि रणनीतिक विलंब रोके जा सकें।

दिवाला और दिवालियापन संहिता (IBC) 2016

- IBC को 2016 में भारत में बढ़ते गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (NPAs) और अप्रभावी ऋण वसूली तंत्र को संबोधित करने के लिए प्रस्तुत किया गया था।
- इसका उद्देश्य कॉर्पोरेट संकट समाधान प्रणाली में सुधार करना है, जिसमें देनदार-नियंत्रित व्यवस्था को हटाकर ऋणदाता-नियंत्रित तंत्र स्थापित किया गया है ताकि समयबद्ध समाधान सुनिश्चित हो सके।
- **IBC समाधान के उद्देश्य:**
 - ▲ **व्यवसाय पुनर्जीवन:** पुनर्गठन, स्वामित्व में बदलाव या विलय के माध्यम से व्यवसायों को बचाना।
 - ▲ **परिसंपत्ति मूल्य का अधिकतमकरण:** देनदार की परिसंपत्तियों के मूल्य को संरक्षित और अधिकतम करना।
 - ▲ **उद्यमिता और ऋण को बढ़ावा देना:** उद्यमिता को प्रोत्साहित करना, ऋण की उपलब्धता में सुधार करना और ऋणदाताओं व देनदारों सहित हितधारकों के हितों में संतुलन स्थापित करना।
- वर्तमान में किसी कंपनी को दिवाला समाधान प्रक्रिया में प्रवेश मिलने के बाद अधिकतम 330 दिनों का समय समाधान खोजने के लिए दिया जाता है। अन्यथा, कंपनी तरलन (liquidation) में चली जाती है।

Source: AIR

संक्षिप्त समाचार

मसौदा सामग्री प्रसारण नीति, 2025

संदर्भ

- प्रसार भारती ने सांस्कृतिक पहुँच को बढ़ावा देने और सामग्री का मुद्रीकरण करने के लिए **मसौदा सामग्री प्रसारण नीति, 2025** तैयार की है।

परिचय

- इस नीति का उद्देश्य दूरदर्शन और आकाशवाणी द्वारा निर्मित सामग्री, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय अभिलेखीय सामग्री,

तथा लाइव कवरेज (सरकारी कार्यक्रम, त्यौहार, खेल आदि) का मुद्राकरण करना है।

- ▲ इसमें प्रसार भारती के OTT प्लेटफॉर्म पर प्रकाशित डिजिटल-प्रथम सामग्री को भी शामिल किया गया है।
- ▲ नीति में प्रसार भारती के स्वामित्व वाली आदेशित, सह-निर्मित, लाइसेंस प्राप्त और अन्य सामग्री के मुद्राकरण का भी प्रस्ताव है।
- मसौदा नीति घरेलू और अंतरराष्ट्रीय प्लेटफॉर्मों के साथ रणनीतिक सहयोग को बढ़ावा देने की परिकल्पना करती है, ताकि प्रसार भारती की सामग्री की पहुँच का विस्तार हो और वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक उपस्थिति बेहतर हो।
- इसमें लचीले लाइसेंसिंग मॉडल जैसे फ्लैट शुल्क, राजस्व साझेदारी, न्यूनतम गारंटी के साथ राजस्व साझेदारी का प्रावधान है।

स्रोत: AIR

2050 तक 900 मिलियन लोग मधुमेह से ग्रसित होने की संभावना

संदर्भ

- अंतर्राष्ट्रीय मधुमेह संघ (IDF) डायबिटीज एटलस के 11वें संस्करण में 2050 तक मधुमेह की वैश्विक प्रसार दर में तीव्र वृद्धि का अनुमान लगाया गया है।

वैश्विक भार का पैमाना

- 20–79 वर्ष आयु वर्ग के मधुमेह रोगियों की संख्या 2024 में लगभग 580 मिलियन वयस्कों से बढ़कर 2050 तक 850–900 मिलियन तक पहुँचने की संभावना है।
- मधुमेह का प्रसार 2024 में वैश्विक वयस्क जनसंख्या का 11.11% से बढ़कर 2050 में 12.96% तक पहुँचने की संभावना है।
- यह आकलन 210 देशों और पाँच क्षेत्रों को कवर करता है, जिससे यह अब तक का सबसे व्यापक वैश्विक मूल्यांकन बन जाता है।
- 2024 में स्थिति:
 - ▲ चीन लगभग 148 मिलियन मधुमेह रोगियों के साथ प्रथम स्थान पर है।

▲ भारत लगभग 90 मिलियन रोगियों के साथ दूसरे स्थान पर है।

▲ संयुक्त राज्य अमेरिका तीसरे स्थान पर है, इसके बाद पाकिस्तान आता है।

- 2050 तक चीन और भारत के शीर्ष दो स्थान बनाए रखने का अनुमान है।

मधुमेह क्या है?

- मधुमेह एक दीर्घकालिक चिकित्सीय स्थिति है जिसमें शरीर को रक्त शर्करा (ग्लूकोज) स्तर को नियंत्रित करने में कठिनाई होती है।
- यह तब होता है जब शरीर पर्याप्त इंसुलिन (एक हार्मोन जो रक्त शर्करा को नियंत्रित करता है) का उत्पादन नहीं करता या उत्पादित इंसुलिन का प्रभावी उपयोग नहीं करता।

मधुमेह के प्रकार:

- टाइप 1 मधुमेह: शरीर बिल्कुल भी इंसुलिन का उत्पादन नहीं करता और यह सामान्यतः बचपन या किशोरावस्था में विकसित होता है।
 - ▲ टाइप 1 मधुमेह आमतौर पर बच्चों और युवाओं में पाया जाता है, हालाँकि यह किसी भी उम्र में हो सकता है।
 - ▲ टाइप 1 मधुमेह वाले लोगों को जीवित रहने के लिए प्रतिदिन इंसुलिन लेना आवश्यक होता है।
- टाइप 2 मधुमेह: शरीर इंसुलिन का सही उपयोग नहीं करता (इंसुलिन प्रतिरोध), जो प्रायः जीवनशैली कारकों के कारण होता है और सामान्यतः वयस्कों में विकसित होता है।
 - ▲ टाइप 2 मधुमेह किसी भी उम्र में हो सकता है, यहाँ तक कि बचपन में भी। हालाँकि, यह मधुमेह का प्रकार सबसे अधिक मध्यम आयु और वृद्ध लोगों में पाया जाता है।
 - ▲ टाइप 2 मधुमेह सबसे सामान्य प्रकार है।

मधुमेह का प्रबंधन :

- यदि मधुमेह का प्रबंधन न किया जाए, तो यह गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं जैसे हृदय रोग, गुर्दे की समस्या और नसों की क्षति का कारण बन सकता है।

- मधुमेह का प्रबंधन सामान्यतः आहार, व्यायाम, दवा और नियमित रक्त शर्करा निगरानी के संयोजन से किया जाता है।

Source: TH

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (RRBs) के लिए नया लोगो

समाचार में

- भारत सरकार ने NABARD के सहयोग से “वन RRB, वन लोगो” पहल के अंतर्गत सभी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (RRBs) के लिए एक साझा लोगो जारी किया है। यह पूरे देश में RRBs की पहचान को एकीकृत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

“वन RRB, वन लोगो” पहल क्या है?

- यह एक सुधारात्मक कदम है, जिसके अंतर्गत भारत में संचालित 43 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के लिए एक समान दृश्य पहचान प्रस्तुत की जाएगी।
- इसे वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवाएँ विभाग (DFS) और राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) द्वारा संयुक्त रूप से लागू किया गया है।
- यह सभी RRB शाखाओं, डिजिटल प्लेटफॉर्म, पासबुक, एटीएम, स्टेशनरी और ग्राहक इंटरफेस पर लागू होगा।



पहल के उद्देश्य

- **एकीकृत पहचान:** RRBs को बिखरी हुई क्षेत्रीय संस्थाओं के बजाय एक राष्ट्रीय बैंकिंग प्रणाली का भाग प्रस्तुत करना।
- **ग्राहक विश्वास:** आसान पहचान और विश्वसनीयता सुनिश्चित कर जनविश्वास को बढ़ाना।
- **संचालनात्मक एकीकरण:** हाल ही में हुए RRBs के विलय और एकीकरण का समर्थन करना।
- **डिजिटल तत्परता:** RRB ब्रांडिंग को आधुनिक बैंकिंग और डिजिटल वित्तीय सेवाओं के अनुरूप बनाना।

RRBs के बारे में

- RRBs की स्थापना क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में संस्थागत ऋण का विस्तार करने और छोटे किसानों, स्वयं सहायता समूहों (SHGs), कारीगरों और MSMEs की सेवा के लिए की गई थी।
- RRBs का स्वामित्व त्रिपक्षीय पैटर्न पर आधारित है:
 - ▲ भारत सरकार – 50%
 - ▲ संबंधित राज्य सरकार – 15%
 - ▲ प्रायोजक बैंक – 35%

स्रोत: TH

आंध्र का रेयर अर्थ कॉरिडोर

समाचार में

- आंध्र प्रदेश की 974 किलोमीटर लंबी तटरेखा को समुद्र तट खनिजों में निहित रेयर अर्थ तत्वों (REEs) के बड़े भंडार के कारण रणनीतिक महत्व प्राप्त हुआ है।

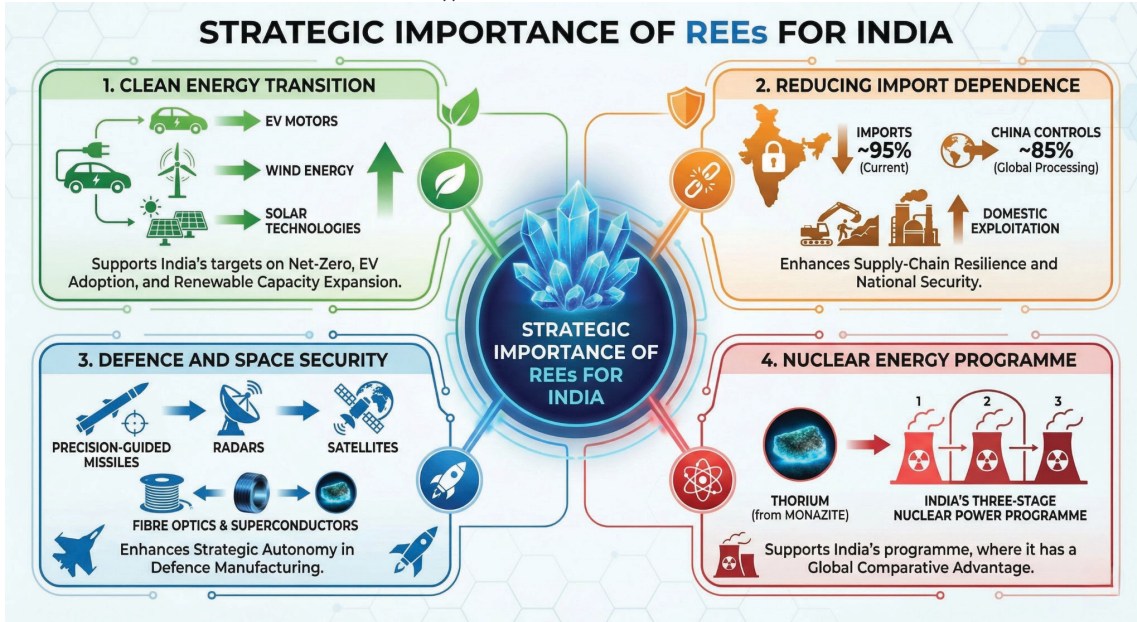
आंध्र का रेयर अर्थ कॉरिडोर क्या है?

- यह आंध्र प्रदेश के तट पर श्रीकाकुलम (उत्तर) से नेल्लोर (दक्षिण) तक फैला हुआ एक सतत खनिज-समृद्ध क्षेत्र है।
- यह समुद्र तट खनिजों से समृद्ध है, जैसे:
 - ▲ मोनाज़ाइट (REEs और थोरियम का प्रमुख स्रोत)
 - ▲ इल्मेनाइट, रूटाइल, जिर्कॉन, गार्नेट और सिलिमेनाइट
- आंध्र प्रदेश के पास भारत के कुल मोनाज़ाइट भंडार का 30–35% हिस्सा है, जो राष्ट्रीय स्तर पर 12–15 मिलियन टन है। इससे यह भारत के सबसे कम उपयोग किए गए महत्वपूर्ण खनिज क्षेत्रों में से एक बन जाता है।

रेयर अर्थ तत्व (REEs) क्या हैं?

- ये 17 तत्वों का एक समूह हैं: 15 लैंथेनाइड + स्कैंडियम + इट्रियम।
- यद्यपि भूगर्भीय रूप से प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, इन्हें “रेयर” कहा जाता है क्योंकि:
 - ▲ ये कम सांद्रता में पाए जाते हैं, और
 - ▲ इनका निष्कर्षण और प्रसंस्करण जटिल, पूंजी-गहन और प्रौद्योगिकी-गहन होता है।
- **REEs का वर्गीकरण :**

- ▲ लाइट REEs : लैंथेनम, सेरियम, नियोडिमियम, प्रसीओडिमियम, समेरियम आदि।
- ▲ हेवी REEs : डिस्प्रोसियम, टर्बियम, इट्रियम आदि।



Source: TOI

रतले परियोजना

समाचार में

- हाल ही में, जम्मू और कश्मीर पुलिस ने मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (MEIL) को सूचित किया कि किश्तवाड़ में निर्माणाधीन 850 मेगावाट रतले जलविद्युत परियोजना में कार्यरत 29 श्रमिकों के उग्रवादी संबंध या आपराधिक पृष्ठभूमि होने का आरोप है।

रतले जलविद्युत परियोजना (850 मेगावाट)

- अवस्थिति:** जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के किश्तवाड़ जिले के द्रब्शल्ला के पास चेनाब नदी पर।
- प्रकार और क्षमता:** नदी-प्रवाह आधारित योजना, जिसकी कुल स्थापित क्षमता 850 मेगावाट है। इसमें 133 मीटर ऊँचा कंक्रीट ग्रेविटी बाँध और संबंधित भूमिगत विद्युत गृह शामिल हैं।
- स्वामित्व संरचना:** रतले हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा लागू, जो NHPC (51% इक्विटी) और JKSPDC (49% इक्विटी) का संयुक्त उपक्रम (JV) है।

स्रोत: IE

रिस्पॉन्ड बास्केट 2025

समाचार में

- हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने रिस्पॉन्ड बास्केट 2025 लॉन्च किया।

रिस्पॉन्ड बास्केट 2025

- यह विभिन्न प्रमुख विश्वविद्यालयों और अन्य मान्यता प्राप्त शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थानों से ISRO के आगामी मिशनों तथा राष्ट्रीय प्राथमिकताओं से संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान प्रस्ताव आमंत्रित करता है।
- यह ISRO की आगामी परियोजनाओं का समर्थन करता है, जिनमें शामिल हैं:
 - ▲ भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन
 - ▲ चंद्रयान-4
 - ▲ गगनयान मिशन
 - ▲ शुक्र ग्रह ऑर्बिटर
 - ▲ मानव चंद्रमा अभियान

Source :TH